Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, DEC-JAN, 2021, VOL-9/43

छात्रों में विद्यालय के प्रति विमुखता की भावना तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

सरिता गोस्वामी, Ph. D.

ऐसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, आई0 आई0 एम0 टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ।

Abstract

*शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करने की प्रक्रिया है, जो शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था तक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। छात्र का विद्यालय से सम्पर्क लगभग तभी प्रारम्भ हो जाता है, जब उसमें इस भौतिक सृष्टि के प्रति संवेदनशीलता जाग्रत होती है। इस विद्यालयी वातावरण में ही छात्रों में विद्यालय के प्रति लगाव अथवा विमुखता की भावना विकसित होती है। इस विमुखता की भावना के विकसित होने के प्रमुख कारणों पर यदि दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होता है कि अध्यापकों का कक्षा–कक्ष परिस्थिति में पढ़ाने के प्रति रुचि न लेने पर, पाठ्यक्रम एक निश्चित समयावधि में पूर्ण न कर पाने के कारण, प्रयोगात्मक परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करने की इच्छा तथा माता–पिता की निजी कार्यों में अति–व्यस्तता ही छात्रों को ट्यूशन अथवा प्राइवेट कोचिंग करने के लिये प्रेरित करती है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ती ने यह जानने का प्रयत्न किया है कि छात्रों में विद्यालय से विमुखता की भावना और ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य क्या सह–सम्बन्ध है? इस शोध अध्ययन हेतु **'सरल अनियत समूह न्यादर्श'** द्वारा 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है'; जिनमें से लिंग के आधार पर 100 लड़के तथा 100 लड़कियाँ तथा जाति के आधार पर 158 सामान्य वर्ग और 42 आरक्षित वर्ग के छात्र हैं। शोधकर्ती ने अपने शोधकार्य के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि छात्र जितना अधिक विद्यालयी परिस्थिति से असन्तुष्ट होगा; वह उतना ही अधिक विद्यालय से अलगाव महसूस करेगा।*

सांकेतिक शब्द : *अभिवृत्ति, विमुखता, अर्थहीनता, शक्तिहीनता, स्वदुराव, सामाजिक उदासीनता, सामान्य वर्ग, आरक्षित वर्ग।*

Scholarly Research Journal's *is licensed Based on a work at* www.srjis.com

प्रस्तावना : प्राचीन काल में भारत के प्रसिद्ध केन्द्रों नालन्दा, तक्षशिला और विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालयों के कारण विश्व के कोने–कोने से लोग यहाँ शिक्षा गृहण करने आते थे, उस समय शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मानव के व्यक्तित्व में समस्त सद्गुणों का विकास करना था। वर्तमान समय में शिक्षा का एकमात्र अभिप्राय यह है कि उत्तम प्रमाण पत्रों व योग्यता के आधार पर एक उत्तम व्यवसाय की प्राप्ति करना। आज शिक्षा धन का पर्याय बन चुकी है। शिक्षकों ने ट्यूशन अथवा प्राईवेट कोचिंग के माध्यम से धन अर्जित करना प्रारम्भ कर दिया है। विद्यार्थियों की कमजोरी यह है कि वह ट्यूशन या प्राईवेट कोचिंग द्वारा लिखित अथवा प्रायोगिक परीक्षा में अधिकाधिक अंक प्राप्त करना चाहता हैं

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

आज भौतिकता की दौड़ में प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, आई0पी0एस0, आई0ए0एस0 अथवा अन्य किसी उच्च सरकारी अथवा प्राईवेट नौकरी प्राप्त कराने के लिये प्रयासरत रहता है। इस कार्य के लिये वे 10,000 रुपये से लेकर कई लाख रुपये तक भी निजी ट्यूशन अथवा प्राईवेट कोचिंग पर खर्च करने को तैयार रहते हैं। अतीत में ट्यूशन की परम्परा के प्रारम्भ होने का प्रमुख कारण यह था कि माता–पिता अपने बच्चों को गणित, विज्ञान, अंग्रेजी जैसे कठिन विषयों में ट्यूशन कराने के लिये विवश थे। इसके अतिरिक्त मानसिक रूप से मंद अथवा पिछड़े बच्चों के लिये भी ट्यूशन की व्यवस्था की जाती थी। उस समय केवल मात्र 10 प्रतिशत छात्र ही ट्यूशन करते थे, जबकि आज 10 प्रतिशत छात्र ही ऐसे हैं, जो ट्यूशन नहीं करते हैं

आज अधिकांशतया छात्र कक्षाओं में फेल होने के डर से भी ट्यूशन करने को विवश होते हैं। यह स्थिति मुख्यतया सरकारी अथवा अर्द्ध–सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में अधिक होती है क्योंकि वहाँ शिक्षक संघ मजबूत होता है परन्तु गैर सरकारी सहायता प्राप्त पब्लिक स्कूलों अथवा अंग्रेजी माध्यम के कान्वेन्ट स्कूलों में ट्यूशन को प्रोत्साहित करने के अन्य कारण उपलब्ध हैं। इन स्कूलों में पाठ्यक्रम की अतिशयता के कारण सत्रीय परीक्षाएं छात्रों को ट्यूशन लेने के लिये बाध्य करती हैं। अन्य कारणों में यह भी है कि माता–पिता दोनों के व्यवसाय में संलग्न रहने के कारण भी कठिन विषयों को पढ़ाना एक समस्या है।

उपर्युक्त सभी पहलुओं पर यदि चिन्ता करें तो अध्यापकों के द्वारा प्रतिमाह ट्यूशन की फीस के रूप में प्राप्त किया धन, वास्तव में छात्रों को परीक्षा में उत्तीर्ण करने की गारण्टी है न कि छात्रों में पढ़ाई की अलख जगाने की शिक्षक की इच्छा। ट्यूशन के प्रति छात्रों का अतिशय झुकाव शिक्षा के स्तर को प्रभावित करता है। ट्यूशन अथवा प्राईवेट कोचिंग के दूसरे पक्ष में विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं यथा–मेडिकल, इंजीनियरिंग, मैनेजमेन्ट, अध्यापक–प्रशिक्षण, बैंकिंग, सिविल सेवा आदि की विशिष्ट तैयारी सम्मिलित है। ट्यूशन का यह पक्ष शोषण पर आधारित नहीं है अपितु छात्र स्वतः ही भविष्य में रोजगार पाने के लिये कोचिंग करने की इच्छा व्यक्त करते हैं। ट्यूशन के इन दोनों रूपों में अन्तर करना आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से शोधकर्ती ने यह जानने का प्रयत्न किया है कि छात्रों में विद्यालय से विमुखता और ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य क्या सम्बन्ध है ? क्योंकि शोधकर्ती यह मानती है कि छात्र जितना अधिक ट्यूशन लेने को विवश होगा, वह विद्यालय से उतना ही अधिक अलगाव महसूस करेगा। अतः विद्यालय से विमुखता की भावना तथा इस भावना के विभिन्न पक्ष तथा छात्र में ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति परस्पर सम्बन्धित है। शोधकर्ती ने इस प्रकार का सह–सम्बन्ध लड़के–लड़कियों तथा सामान्य व पिछड़ी जातियों के विद्यार्थियों के मध्य परखने के लिये प्रस्तुत शोध कार्य किया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

समस्या का कथन :–

छात्रों का विद्यालय के प्रति लगाव अथवा विमुखता को प्रभावित करने वाले कारकों में व्यक्तिगत योग्यताएँ, रुचियाँ, अभिवृत्तियाँ, पारिवारिक व सामाजिक वातावरण सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त विद्यालय के वातावरण, अध्यापकों व प्रधानाचार्यों की विशेषताएँ आदि छात्रों की इस भावना पर प्रभाव डालते हैं। छात्रों में विद्यालय के प्रति विमुखता के चार प्रमुख अवयव है :–

1. अर्थहीनता Meaninglessness
2. शक्तिहीनता Powerlessness
3. स्वदुराव Self Estrangment
4. समाजिक उदासीनता Social Apath

उपरोक्त अवयवों के योग से भी विमुखता का ज्ञान होता है। छात्रों में विमुखता की भावना त्वरित उत्पन्न नहीं होती है और न ही क्षणिक होती है। यह एक बार उत्पन्न होने पर काफी लम्बे समय तक बनी रहती है। प्रस्तुत शोध कार्य को शोधकर्ती ने निम्न शीर्षक के अन्तर्गत सम्पन्न किया है। **''छात्रों में विद्यालय के प्रति विमुखता की भावना तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन''**

शोध के उद्देश्य :–

1. छात्रों में विमुखता तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।
2. अलगाव के चारों अवयवों यथा अर्थहीनता, शक्तिहीनता, स्वदुराव, सामाजिक उदासीनता तथा ट्यूशन की अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।
3. छात्रों में विमुखता तथा उसके अवयवों तथा ट्यूशन के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्धों को सामान्य वर्ग व आरक्षित वर्ग के छात्रों के लिये ज्ञात करना।

शोध की मूल अवधारणाएँ :–

1. विद्यालयी परिस्थिति में छात्र विद्यालय के प्रति विमुखता की भावना विकसित कर लेते हैं। यह भावना भिन्न–भिन्न छात्रों में भिन्न–भिन्न मात्रा में पाई जाती है।
2. विमुखता के विभिन्न अवयव नामतः–अर्थहीनता, शक्तिहीनता, स्वदुराव, सामाजिक विमुखता की भावना के स्वतन्त्र आयाम है। अतः ये भी छात्रों में भिन्न–भिन्न मात्राओं में उपस्थित होंगे।
3. भिन्न–भिन्न छात्रों में ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति की भिन्न–भिन्न मात्रा होगी। छात्रों में विद्यालय से विमुखता की भावना तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति एक–दूसरे को प्रभावित करने वाले गण हैं।
4. छात्रों में विद्यालय से विमुखता की भावना तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति एक दूसरे को प्रभावित करने वाले गुण हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

5. विद्यालय के प्रति विमुखता के विभिन्न आयाम भी अलग–अलग ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति से सह–सम्बन्धित है।
6. उपर्युक्त सह–सम्बन्ध इण्टरमीडिएट स्तर के सभी छात्र तथा इसी स्तर के लड़के व लड़कियों तथा सामान्य व आरक्षित वर्ग के छात्रों के लिये भिन्न–भिन्न मात्रा में व भिन्न–भिन्न दशाओं में होंगे।

परिकल्पना :–

1. छात्रों में विद्यालय के प्रति विमुखता तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सह–सम्बन्ध नहीं है।
   (क) अर्थहीनता तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सह–सम्बन्ध नहीं है।
   (ख) शक्तिहीनता तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सह–सम्बन्ध नहीं है।
   (ग) स्वदुराव तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सह–सम्बन्ध नहीं है।
   (घ) सामाजिक उदासीनता तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सह–सम्बन्ध नहीं है।
2. उपर्युक्त सभी शून्य परिकल्पनाएँ लड़के तथा लड़कियों तथा सामान्य वर्ग के छात्रों व आरक्षित वर्ग के छात्रों के लिये भी मान्य है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

1. **अभिवृत्ति :** अभिवृत्ति मनुष्य की वह भावनात्मक और मानसिक प्रत्यय है, जिसमें मनुष्य अपने भिन्न–भिन्न अनुभवों का समन्वय करता है। इसके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में सामाजिक व बौद्धिक गुणों का समावेश होता है। इस विचारधारा के प्रमुख प्रवर्त्तक आलपोर्ट है।
2. **विमुखता का प्रत्यय :** विमुखतावादिता एक मानवीय व्यावहारिक प्रक्रिया है तथा यह आधुनिक औद्योगिक एवं तकनीकी क्रान्ति का ही परिणाम है। यद्यपि विमुखतावादरूपी भावना के बीज का अंकुरण इतिहास के प्राचीन युग में दृष्टिगोचर होता है तथापि इसके वर्तमान स्वरूप कतिसिद्ध जर्मन दार्शनिक मार्क्स व ऐजिल के लेखों में प्रस्फुटित होते है।

विमुखतावाद मानव की एक ऐसी विशिष्ट मनोवृत्ति के परिचायक है जिसमें वे संसार में घटित घटनाओं, व्यक्तियों, विचारों और मूल्यों में परिवर्तन करने में अपने को शक्तिहीन अथवा असहाय अनुभव करता है। ऐसे व्यक्ति के मानस में ये भावना दृढ़ हो जाती है कि वह निर्णय प्रक्रिया में चाहे वो विद्यालयी परिस्थिति में, कौटुम्बिक परिस्थिति में, सामाजिक परिस्थिति अथवा अन्य परिप्रेक्ष्य में हो, कोई विशिष्ट प्रभाव अथवा भूमिका नहीं रखता, वह शक्तिहीन है, जो घटित हो रहा है, होता रहेगा।

विमुखतावाद का दूसरा प्रमुख घटक यह है कि व्यक्ति विभिन्न सामाजिक स्तरों अथवा वर्गों कुटुम्ब, समाज, विद्यालय, नगर, राज्य, राष्ट्र में होने वाली क्रियाओं को मूल्यहीन अनुभव करने लगता है। वास्तविकता यह है कि इन मूल्यों का स्वतन्त्र रूप में न कोई अस्तित्व और न ही ये घटनाएँ कोई मूल्य

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

रखती है। परन्तु यह सामाजिक जीवन की विभिन्न क्रियाओं, मूल्यों और आदर्शों में धनात्मक व ऋणात्मक सम्बन्ध स्थापित कर देता है।

विमुखतावाद का तीसरा प्रमुख घटक व्यक्ति का स्वयं के प्रति विरक्त होना है। व्यक्ति अपनी प्रगति में रुचि लेना छोड़ देता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं के प्रति भावनाओं के कारण निरपेक्ष तथा तटस्थता का भाव तभी रखता है जब उसे न तो उपलब्धि में प्रसन्नता और न असफलता में निराशा होती है।

विमुखतावाद की अन्तिम घटक : समाज के प्रति असम्बन्धिता है। समाज में निरन्तर घटित होने वाले राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और सुधारवादी विचारों के प्रति न तो कोई आकृष्टता होती है और न ही देश में घटित होने वाली समस्त घटनाओं के प्रति कोई ऋणात्मक अथवा धनात्मक प्रतिक्रिया होती है। उस पर इन सबका कोई प्रभाव नहीं होता है।

अर्थहीनता : सामान्यता प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति, विचार, मूल्य, घटना तभी अर्थपूर्ण होती है जब वह मनुष्य के जीवन को परोक्ष रूप से प्रभावित करती है परन्तु कुछ व्यक्तियों के जीवन संघर्ष में एक ऐसी मानसिक स्थिति निर्मित हो जाती है, जब वे हर व्यक्ति, वस्तु, क्रिया, घटना आदि को अर्थहीन अनुभव करने लगते हैं।

उदाहरण–कुछ व्यक्तियों के लिये मत देना, महत्त्वपूर्ण हो सकता है। परन्तु कुछ के लिये व्यर्थ की क्रिया हो सकती है। ये भावना उसकी अर्थहीनता के दृष्टिकोण की परिचायक है।

3. **शक्तिहीनता :** इसके अन्तर्गत व्यक्ति निर्णय प्रक्रिया में अपने को महत्त्वहीन अनुभव करने लगता है। जब व्यक्ति पारिवारिक निर्णयों में, संस्थागत निर्णयों में, समाजगत निर्णयों में कोई विशिष्ट भूमिका निभाने में स्वयं को असमर्थ अनुभव करता है तो वह अपने को शक्तिहीन अनुभव करने लगता है।
4. **स्वदुराव :** इसके अन्तर्गत व्यक्ति अपने अहं के साथ असम्बन्धित होता है। मनोश्लिेषणवादियों के अनुसार–व्यक्तित्व के चार प्रमुख घटक हैं, अर्थात् अहं, श्रेष्ठ मन, निम्न मन, सामाजिक यथार्थता। सामान्यता मन अथवा अहं इन शेष तीनों व्यक्तित्व के पक्षों के साथ समन्वय रखता है और प्रत्येक घटक की अपेक्षाओं की पूर्ति करने का प्रयास करना है। जीवन की प्रक्रिया में कभी–कभी ऐसी स्थिति आ जाती है जब मन न तो इन तीनों घटकों के साथ सामन्जस्य कर पाता है और न ही अपने से सतत् अनुराग स्थापित कर पाता है। अपने मन जगत में वे एक अकेला जीवन बन जाता है। मन से उसके बन्धन टूट जाते हैं और वह मानवीय क्रियाओं को सम्पादित करने में असमर्थ हो जाता है, जिसका सम्पादन जीवन के लिये आवश्यक होता है।
5. **सामाजिक उदासीनता :** 'समाज की संरचना' और उसका स्थायित्व अथवा सुदृढ़ता इस बात पर निर्भर करती है कि समाज के सदस्य कितनी सीमा तक सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु परस्पर समायोजन एवं सक्रिय भूमिका अदा करते हैं। इसके विपरीत कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो समाज

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

में होने वाले उत्सवों, घटनाओं, प्रक्रियाओं, कार्यकलापों आदि के प्रति पूर्णतः उदासीन हो जाते हैं। व्यक्ति की यह उदासीनता की भावना ही उनकी सामाजिक उदासीनता को प्रतिबिम्बित करती है।

6. **आरक्षित वर्ग :** वे सभी छात्र जो अनुसूचित, जनजाति व अन्य पिछड़े वर्गों से सम्बन्धित हैं।
7. **सामान्य वर्ग :** वे सभी छात्र जो आरक्षित वर्ग के बाहर हैं।
8. **शोध की जनसंख्या :** शोध की जनसंख्या में मेरठ शहर के 11वीं व 12वीं कक्षा के छात्र ही सम्मिलित किये गये हैं।
9. **न्यादर्श की तकनीकी :** 'सरल अनियत समूह न्यादर्श' के द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।
10. **न्यादर्श का आकार :** उपर्युक्त विधि द्वारा 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। लिंग की दृष्टि से इनमें 100 लड़के तथा 100 लड़कियाँ हैं। आरक्षण की दृष्टि से इनमें 158 सामान्य वर्ग के छात्र तथा 42 आरिक्षत वर्ग के छात्र हैं।
11. **शोध की विधि :** प्रस्तुत शोध में सह–सम्बन्धीय विधि प्रयुक्त की गई, जिसमें सामान्य पीयरसन के सह–सम्बन्ध गुणांकों की गणना की गई है। स्पष्ट है कि सह–सम्बन्ध दो सतत् चरों के मध्य ज्ञान किया जाता है।

शोध के चर

स्वतन्त्र चर : प्रस्तुत शोध में स्वतन्त्र चर के रूप में, विद्यार्थियों में विमुखता के चार अवयव यथा–अर्थहीनता, शक्तिहीनता, स्वदुराव एवं सामाजिक उदासीनता तथा छात्रों की आयु।

परतन्त्र चर : विद्यार्थियों में ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति परतन्त्र चर की सूचक है।

परिमित चर : लिंग तथा सामान्य व आरक्षित वर्ग शोध के परिमित चर है।

नियन्त्रित चर : मेरठ शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का निवास स्थान व शिक्षा का स्तर इस शोध के नियन्त्रित चर हैं।

चरों के मापन यंत्र

	चर	यंत्र	निर्माता
1.	छात्रों में विमुखता	छात्रों में विमुखता मापनी	डॉ0 के0 जी0 शर्मा
2.	ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति मापनी	डॉ0 ए0 के0 शर्मा एवं नरेन्द्र शर्मा
3.	छात्रों की आयु, लिंग, आरक्षित या अनारक्षित वर्ग	स्व विवरण प्रपत्र	स्वनिर्मित

सांख्यिकीय विधि : प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के विश्लेषण के लिये **पीयरसन का सह–सम्बन्ध गुणक** ज्ञात किया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

क्रमांक	सह–सम्बन्धित चर	सह सम्बन्ध का मान	सार्थकता स्तर
लड़के 100	अर्थहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.010	सार्थक नहीं
	शक्तिहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.078	सार्थक नहीं
	स्वदुराव व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.306	0.01 स्तर पर सार्थक
	सामाजिक उदासीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	–0.020	सार्थक नहीं
	विमुखता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.121	सार्थक नहीं
	आयु व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	–0.035	सार्थक नहीं
लड़कियाँ 100	अर्थहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.105	सार्थक नहीं
	शक्तिहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.014	सार्थक नहीं
	स्वदुराव व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.396	0.01 स्तर पर सार्थक
	सामाजिक उदासीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.241	0.01 स्तर पर सार्थक
	विमुखता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.181	0.05 स्तर पर सार्थक
	आयु व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	–0.357	0.01 स्तर पर सार्थक
सामान्य वर्ग के विद्यार्थी (158)	अर्थहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.553	0.01 स्तर पर सार्थक नहीं
	शक्तिहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.018	सार्थक नहीं
	स्वदुराव व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.197	0.05 स्तर पर सार्थक
	सामाजिक उदासीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.099	सार्थक नहीं
	विमुखता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.425	0.01 स्तर पर सार्थक
	आयु व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.042	सार्थक नहीं
आरक्षित वर्ग के विद्यार्थी (42)	अर्थहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.325	0.01 स्तर पर सार्थक
	शक्तिहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	–0.005	सार्थक नहीं
	स्वदुराव व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.447	0.01 स्तर पर सार्थक
	सामाजिक उदासीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	–0.074	सार्थक नहीं
	विमुखता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.163	0.05 स्तर पर सार्थक
	आयु व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	–0.073	सार्थक नहीं
सम्पूर्ण समूह (200)	अर्थहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.058	सार्थक नहीं

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

	शक्तिहीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	–0.000	सार्थक नहीं
	स्वदुराव व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.338	0.01 स्तर पर सार्थक
	सामाजिक उदासीनता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.124	सार्थक नहीं
	विमुखता व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	0.139	0.05 स्तर पर सार्थक
	आयु व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति	–0.011	सार्थक नहीं

प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष :–

1. लड़कों के समूह के लिये उनकी विमुखता व आयु तथा टयूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध

प्रथम शीर्षक के अन्तर्गत लड़कों के समूह के लिये अर्थहीनता, शक्तिहीनता, सामाजिक उदासीनता, विमुखता व आयु तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सह– सम्बन्ध शून्य पाया गया। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अर्थहीनता, शक्तिहीनता, सामाजिक उदासीनता, विमुखता, आयु और ट्यूशन की अभिवृत्ति के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

स्वदुराव व ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध घनात्मक और अत्यधिक सार्थक पाया गया। अतः निष्कर्षतः कह सकते हैं कि लड़कों में स्वदुराव बढ़ने पर ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति बढ़ती है। सम्भवतया स्वदुराव बढने से उनका आत्मविश्वास घटता है और वे ट्यूशन की ओर अधिक प्रवृत्त होते हैं।

2. लड़कियों के समूह के लिये उनकी विमुखता व आयु तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य परस्पर सह–सम्बन्ध :

द्वितीय शीर्षक के अन्तर्गत लड़कियों के समह के लिये अर्थहीनता, शक्तिहीनता और ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सहसम्बन्ध शून्य पाया गया। अर्थात् कोई सह–सम्बन्ध नहीं है।

स्वदुराव, सामाजिक उदासीनता, विमुखता व आयु तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध अत्यधिक सार्थक हैं। अतः हम सकते हैं कि लड़कियों में स्वदुराव की भावना की अधिकता ही उन्हें ट्यूशन की ओर प्रवृत्त करती है तथा समाज से विरक्त होने पर ही लड़कियों में ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति बढ़ जाती है। लड़कियों में विमुखता की भावना की अधिकता ही उन्हें ट्यूशन की ओर प्रवृत्त करती है तथा लड़कियों की आयु के बढ़ने पर उनकी ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति कम हो जाती है और कम आयु की लड़कियों में ट्यूशन के प्रति अधिक रूझान रहता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

3. सामान्य वर्ग के छात्रों के लिये उनकी विमुखता व आयु तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध :–

तृतीय शीर्षक के अन्तर्गत सामान्य वर्ग के छात्रों में शक्तिहीनता, सामाजिक उदासीनता, आयु तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध शून्य पाया गया। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि सामान्य वर्ग के छात्रों के द्वारा विद्यालय में व्याप्त दोषों, जैसे (नियम, विद्यालय स्तर, अध्यापक छात्र अनुपात आदि) को दूर करने में शक्तिहीनता के होने से उनके ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। विद्यार्थियों में स्वदुराव की प्रवृत्ति की अधिकता ही उन्हें ट्यूशन की ओर प्रवृत्त करती है। सामान्य वर्ग के छात्रों में विमुखता की भावना के बढ़ने से आत्मविश्वास में कमी आ जाती है और वे ट्यूशन की ओर प्रवृत्त होते जाते हैं। सामान्य वर्ग के छात्रों की आयु, उनकी ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करती है।

4. आरक्षित वर्ग के छात्रों के लिये उनकी विमुखता व आयु तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य पारस्परिक सह–सम्बन्ध :–

चतुर्थ शीर्षक के अन्तर्गत आरक्षित वर्ग के छात्रों में शक्तिहीनता, सामाजिक उदासीनता व आयु तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य परस्पर सह–सम्बन्ध नहीं है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों को विद्यालय की गतिविधियों में परिवर्तन करने या कराने में अपने को शक्तिहीन पाने पर उनकी ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों में सामाजिक उदासीनता की प्रवृत्ति तथा ट्यूशन की प्रवृत्ति सम्बन्ध रहित है। आरक्षित वर्ग के छात्रों की आयु का उनके ट्यूशन की ओर प्रवृत्त होने में कोई सम्बन्ध नहीं है।

आरक्षित वर्ग के छात्रों में अर्थहीनता, स्वदुराव, विमुखता और ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध सार्थक पाया जाता है। इस वर्ग के विद्यार्थियों को विद्यालय की कार्यविधि के अर्थहीन लगने पर उनकी ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति में वृद्धि होती है। विद्यालयी क्रियाओं में सन्तुष्टि न मिलने पर ही वे ट्यूशन की ओर प्रवृत्त होते हैं। छात्रों में विमुखता की भावना की अधिकता ही उन्हें ट्यूशन की ओर प्रवृत्त करती है।

5. सम्पूर्ण समूह के विद्यार्थियों के लिये उनकी विमुखता व आयु तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य पारस्परिक सह–सम्बन्ध :–

पंचम वर्ग के अन्तर्गत, सम्पूर्ण समूह के विद्यार्थियों में अर्थहीनता, शक्तिहीनता, सामाजिक उदासीनता व आयु तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध शून्य पाया गया। सम्पूर्ण समूह के विद्यार्थियों तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। विद्यार्थियों में अर्थहीनता तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। विद्यार्थियों में सामाजिक उदासीनता और ट्यूशन की प्रवृत्ति में कोई सम्बन्ध नहीं है। सम्पूर्ण समूह के विद्यार्थियों की आयु, ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करती हैं

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सम्पूर्ण समूह के विद्यार्थियों में स्वदुराव, विमुखता तथा ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध सार्थक है। विद्यार्थियों में स्वदुराव की अधिकता ही उन्हें ट्यूशन की ओर प्रवृत्त करती है। विद्यार्थियों में विद्यालय से विमुखता ही उन्हें ट्यूशन की ओर प्रवृत्त करती है।

परिकल्पनाओं की वैधता

1. प्रथम परिकल्पना लगभग सत्य पाई गई है।
2. द्वितीय परिकल्पना, लड़के तथा लड़कियों के लिये सत्य पाई गई है, परन्तु जब समूह को सामान्य व आरक्षित वर्ग में विभाजित किया गया, तो वह असत्य पाई गई।
3. तृतीय परिकल्पना पूर्णतया सत्य पाई गई है।
4. चतुर्थ परिकल्पना पूर्णतया असत्य पाई गई है। स्वदुराव एक स्थिति में ट्यूशन के प्रति अभिवृत्ति से सबसे अधिक सम्बन्धित है।
5. पंचम व अन्तिम परिकल्पना, केवल लड़कियों के लिये असत्य पाई गई है। शेष सभी उपसमूहों के लिये सत्य पाई गई है।

अन्य भविष्य में शोधों के लिये सुझाव :–

1. यह शोध कार्य बड़े समूह पर सम्पन्न किया जा सकता है।
2. अधिक उच्च स्तर की तकनीकियों का प्रयोग करके आँकड़ों को अधिक प्रभावशाली रूप में विश्लेषित किया जा सकता है।
3. ट्यूशन की प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले अन्य चरों को भी खोज की जा सकती है।
4. इसकी तुलना व्यक्तित्व के अन्य घटकों से भी की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

इनसाइक्लोपीडिया ऑपफ एजुकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम 1–3, एक्सपैरिमेन्ट पी 1187।

फ्रेजियर फ्रैडी लुईस 1995 ''ए प्राब्लम ऑफ द इफैक्ट ऑफ टीचिंग मैथमैटिक्स इन्डिव्युडेलाइन्ड इन्स्ट्रक्शेन, टीम टीचिंग, एण्ड द ट्रेडिशनल मैथड टु कॉलेज फ्रैश्मन लिबरल आर्ट मेजर, डेजेरटेशन एब्सट्रैक्टस इन्टरनेशनल, वॉल्यूम 36 (5–6) 1975, पी0 2588–ए।

हैनरी इ0 गैरेट, ''स्टेटस्टकल एक्सपैरिमेन्टस इन साइक्लौजी''।

ट्यूशन का सवाल : एक परिचारिका–''मतभिन्नता का शिकार है शिक्षक वर्ग'' दिसम्बर 1992, जे0एस0 आत्रे, दैनिक जागरण।

ट्यूशन का सवाल : एक परिचारिका–''शिक्षा मन्दिरों को दुकान न बनाया जाये'' जे0एस0 आत्रे, दैनिक जागरण।

नियमित स्कूल नहीं आना सबसे बड़ी समस्यास, 'पत्रिका डॉट कॉम', 23 दिसम्बर, 2018।

शर्मा श्वेता, कालिया के0ए0 (जौलाई 2015) ''ए स्टडी ऑफ एटीट्यूड ऑफ स्टूडेन्टस टुवर्डस प्राईवेट ट्यूशन एट सीनियर सेकेण्डरी लेवल'' शिक्षा विभाग, एम0डी0 यूनिवर्सिटी, रोहतक।

ट्रॉम्बा चिंग्धम और शर्मा डेविड लैयमायम, 2015, ''प्राईवेट ट्यूशन के लिये पेरेन्टस का एटीट्यूड : एक केस स्टडी,'' वर्किंग पेपर 2015, 06–07, वॉयस ऑफ रिसर्च।

डॉ0 रानी अलका दिसम्बर 2016 वॉल्यूम 2, नम्बर 05, जर्नल ऑफ सोशियो एजुकेशनल एण्ड कल्चर्ल रिसर्च'', एटीट्यूड ऑफ स्टूडेन्ट्स टुर्वडस ट्यूशन।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language